फणीश्वरनाथ रेणु का साहित्य

संदर्भ और प्रकृति

संपादक मंडल

डॉ. सतीश यादव

डॉ. संतोष कुलकर्णी

डॉ. रणजीत जाधव

डॉ. हणमंत पवार

Be AatmaNirbhar. Use Kaagaz

फणीश्वरनाथ रेणु का साहित्य
संदर्भ और प्रकृति

संपादक मंडल
डॉ. सतीश यादव
डॉ. संतोष कुलकर्णी
डॉ. रणजीत जाधव
डॉ. हणमंत पवार

यश पब्लिकेशंस
नई दिल्ली, भारत

Be AatmaNirbhar. Use Kaagaz

ISBN : 978-93-85647-03-1

प्रथम संस्करण : 2022

© लातूर जिला हिंदी साहित्य परिषद्, लातूर

मूल्य : ₹ 1495/-

इस पुस्तक के सर्वाधिकार सुरक्षित हैं। प्रकाशक या लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को, फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलैक्ट्रॉनिक अथवा मशीनी, किसी भी माध्यम से अथवा ज्ञान के संग्रहण एवं पुनर्लिखित प्रणाली द्वारा, किसी भी रूप में, पुनरुत्पादित अथवा संचारित-प्रसारित नहीं किया जा सकता।

प्रकाशक : यश पब्लिकेशंस
1/10753, सुभाष पार्क, नवीन शाहदरा
दिल्ली-110 032 (भारत)

विक्रय कार्यालय
2/9, अंसारी रोड,
दरियागंज, नई दिल्ली-110 002

संपर्क : 9599483887
ई-मेल : info@yashpublications.co.in
वेबसाइट : www.yashpublications.co.in

डिस्ट्रीब्यूटर : यश पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स प्रा. लि.
Available at : amazon.in, flipkart.com

लेज़र टाइपसेटिंग : जी.आर.एस. ग्राफिक्स, दिल्ली

मुद्रक : नागरी प्रिंटर्स, दिल्ली

Be AatmaNirbhar. Use Kaagaz

61. 'तीसरी कसम' कहानी की कहानी कला 352
प्रा. डॉ संजय गड़पायले

62. 'तीसरी कसम' का कथानायक हिरामन 357
डॉ. बी. आर. गायकवाड

(क) गद्यकार फणीश्वरनाथ रेणु

63. 'ऋणजल धनजल': एक सफल रिपोर्ताज 362
प्रो. डॉ. रमेश संभाजी कुरे

(ड) समग्र रेणु : रेणु की समग्रता

64. आँचलिकता का अतिक्रमण करते आदि विमर्शकार फणीश्वरनाथ रेणु 368
प्रो. भारती गोरे

65. प्रतिबद्धता के लेखक : फणीश्वरनाथ रेणु 378
प्रो. सुधाकर शेंडगे

66. फणीश्वरनाथ रेणु और नागार्जुन के उपन्यासों में अंत : संबंध 384
डॉ. लुटे मारोती भारतराव

67. रेणु के कथा साहित्य में यथार्थवाद 388
डॉ. संतोष सुभाषराव कुलकर्णी

68. रेणु जी का कथा साहित्य और जाति 393
डॉ. मोहन शिंदे

69. फणीश्वरनाथ रेणु की रचनाओं में सर्वहारा वर्ग का जीवन 397
प्रा. अमोल ज्ञानोबा लांडगे

70. कथाकार रेणु और आँचलिक भाव 401
डॉ. सुब्राव नामदेव जाधव

71. फणीश्वर नाथ रेणु का साहित्य और हाशिये का समाज 407
डॉ संतोष महीपति

72. फणीश्वर नाथ रेणु के साहित्य में सामाजिक यथार्थ 413
डॉ. दीपा रागा

Be AatmaNirbhar. Use Kaagaz

'तीसरी कसम' का कथानायक हिरामन

डॉ. बी. आर. गायकवाड

फणीश्वरनाथ रेणु की जन्मभूमि बंगाल और नेपाल के निकट है। इसलिए इन दोनों प्रदेशों का प्रभाव उनके व्यक्तित्व पर पडा है। कुमार विमल ने इसलिए लिखा है, "खान पान से लेकर पानी ग्रहन तक सब में रेणु बंगाली सुवास रखते थे। वे लगभग पूरे बंगाली थे। बंगाल के समान रेणु की जन्मभूमि के निकट नेपाल का राज्य भी है। इसी निकटता के कारण उन्होने "दसगज्जा के इस पार और उस पार" कहानी लिखी है। रेणु के व्यक्तित्व पर ऑचालिकता का प्रभाव दिखाई देता है। 'निर्मल वर्मा ने कहा है' वह समकालीन हिन्दी साहित्य के संत लेखक थे वे कथा सहित्य के पूर्वाचल के एक महागाथा कार है। रेणु ने उपन्यासों के अतिरिक्त अनेक कहानियॉ लिखी है। परवर्ती कहानियो में जहॉ पॉच छह पृष्ठो की भी कहानियॉ है। वहॉ प्रारंभिक कहानियों में 'तीसरी कसम' नामक कहानी लगभग 39 पृष्ठों तक फैली है।

रेणु की आँचलिकता प्रधान कहानियों में तीसरी कसम, लाल पान की बेगम, रसप्रिया, पंचलाईट, सिरपंचमी का सगुण, एक आदिम रात्रि की महक, संवदिया आदि कहानियॉ महत्वपूर्ण है। इन कहानियों में कथानक के रुप में अंचल ही समग्रता के साथ चित्रित हुआ है। 'तीसरी कसम उर्फ मारे गए गुलफाम' नामक कहानी में उल्लिखित अंचल का भूगोल स्पष्ट उभरकर सामने आया है।कहानी का नायक 'हिरामन' अपनी तीनों कसमे उसी अंचल से लेता है। पूर्णिया जिले के जोगबनी स्टेशन से नेपाल के विराट नगर तक चोर बजारी का माल ढोते समय गाडी खोकर जान बचाकर वह प्रथम कसम लेता है, कि अब कभी भी ऐसी चीजों की लदनी नही लादेंगे चोर बाजारी का माल तोंबा-तोबा पता नही मुनीमजीका क्या हुआ भगवान जाने उसकी सग्गड गाडी का क्या हुआ। असली इस्पात लोहे

Be AatmaNirbhar. Use Kaagaz

की धुरी भी। दोंनो पहिए तो नही एक पहिया एक दम नया था गाडी में रंगीन डोरियों के फुदने बडे जतन से गुंथे गए थे। हिरामन के इसी कथन से स्पष्ट होता है की, वह कितना इमानदार है। वह गरीब होने की वजह से ही बैलगाडी की चिंता करता है जो पुलिस के हाथ लग गयी थी। हिरामन ने बैलगाडी को जीजान से सजाया था। इसलिए वह बैलगाडी को पुलिस के हाथ लगने से दुखी होता है लेकिन अपना सच्चाई का रास्ता छोडता नही।वह कहेता है बुरे कर्म का फल बुरा ही होता है। वह कसम खाता हैअब बुरा कर्म नही करेगे। यही उसके चरित्र की मूल विशेषता है।

हिरामन की दूसरी कसम फारबिस गंज से बांस की लदनी लादकर घोड़ा गाडी से टक्कर होने पर हर भाडेदार को वह पहले ही पुछ लेता है। "चोरी चमारी वाली चीज तो नही" और बांस लादने के लिए पच्चास रुपये भी दे कोई तो भी हिरामन की गाडी नही मिलेगी, दूसरे की देखे, हिरामन की इन्ही बातों से यह स्पष्ट होता है कि वह अपने लिए हुए निर्णय मे किसी भी हालत में कोई बदलाव नही करता। वह चोरी चमारी नही करेगा मतलब नही करेगा यह उसकी स्वभावगत विशेषता है। जो कथा का नायक होता है वह अपनी भूमिका को नही बदलता, वह मर जाएगा लेकिन अपना निर्णय नही बदलेगा। यह हिरामन का गुण उसको कथा का नायक बना देने में सक्षम बनाता है। कथानायक वही पात्र बन सकता है जिस पात्र का चरित्र ऊँचा हो। हिरामन के चरित्रमे गुण ज्यादा है इसलिए वह कहानी का कथानायक है।

हिरामन तीसरी कसम यह लेता है की फारबिस गंज के मेले में नौंटकी कम्पनी की नर्तकी हीराबाई को ले जाने के बाद होती है।वह की हिरामन ने कहा जाने दो अभागे तकदीर में लिखा नही हैं पहले हां गुरुकसम खानी होगी सभी को गॉव घर मे यह बात पंच्छि भी जान न पाए कि वह कम्पनी की औरत बैलगाडी मे बिठाकर ले आया है। मतलब चोरी का माल और कम्पनी की औरत ये दोनो चिजे बराबर है मतलब दोनो काम करना गलत है। हिरामन को अच्छे बुरे की पहचान है यह बात गॉव मे पता चलेगी तो अपनी बेइज्जती होगी इसका डर हिरामन के मन में है। जो अच्छे इन्सान होते है उन्ही को इस बात का डर लगता है। इन्हीं बातो से हिरामन का चरित्र बहुत निखर पाता है यह उसके चरित्र की विशेषता है। कथानायक हिरामन का कार्य क्षेत्र पूर्णिया अंचल के इर्द-गिर्द का ही है इतना ही नही हिराबाई से होने वाले वार्ता लाप के दौरान और यात्रा की अवधि में कथाकारने फारबिसगंज, छतापूर पचिरा, तेगछिया, कजरी नदी

Be AatmaNirbhar. Use Kaagaz

...नपुर, बिसनपुर आदि अनेक स्थलों का चित्रण करके हिरामन के चरित्र पर ...आंचलिता के प्रभाव को भी स्पष्ट किया है।

हिरामन अपने भाई से बढकर भाभी की इज्जत करता है। भाभी से डरता है हिरामन की शादी हुई थी बचपन में ही गौने के पहले ही दुल्हन मर गयी थी। दूसरी शादी न करने के अनेक कारण है इन्ही बातों से पता चलता है कि वह अपने भाभी की कितनी इज्जत करता है वह अपने परिवार से कितना जुडा हुआ है अपनी भाभी का कितना सम्मान करता है। हिरामन भारतीय संस्कृति और समाज का प्रतितिधित्व करनेवाला आदर्श पात्र है। हिरामन की इन्ही अच्छाइयों की वजह से हिराबाई भी कहती है। "हिरामन कितना निश्चल आदमी है" यह वाक्य वह उसके स्वभाव को परखकर ही कहती है। हिराबाई कम्पनी की औरत है फिर भी हिरामन उसकी कितनी इज्जत करता है। हिरामन के मन मे अपनी भाभी की जितनी इज्जत है उतनी ही हिराबाई की है यह उसके स्वभाव से स्पष्ट होता है इसलिए वह इस कहानी का कथानायक है। हिरामन हिराबाई के मुँह से जब कानपुर नाम सुनतेही उसने कहा कानपुर है तो नागपुर ही होगा कहकर अपना सिरनिचा कर लेता है। हिराबाई कहैती है नागपुर भी है इसी संवादो से यह जान पडता है की हिरामन कितने भोले स्वभाव का है और इमानदार भी है। बैलगाडी में कौन है पूछने के बाद हिरामन जवाब देता है। उसके गाडी पर 'बिदागी' मतलब नैहर या ससुराल जाती हुई लडकी इस प्रकार के संवादों से हिरामन का चरित्र और भी ऊँचा उठता है और यह पात्र कहानी का कथानायक बनने का हकदार है।

तीसरी कसम कंहानी में एक प्रसंग आता है हिरामन को पूछा जाता है, कहाँ जाता है मेला कहाँ से आना हो रहा है। बिसनपूर से बस इतनी दूर से धसधसावर थक गए "जा रे जमाना" जा रे जवानी जैसे शब्दो का प्रयोग हिरामन करता है। वह जा रे जमाना कहकर मानो अपनी बात को इस तकिया कलाम को चाशनी मे डाल देता हैऔर अपने मन की व्यथा को व्यक्त करता है। हिरामन दुनियाभर की निगाहों से हिराबाई को बचाकर रखना चाहता है। उसने चारों और नजर दौडाकर देख लिया कही कोई गाडी या घोडा नही और वह हिराबाई को कहता है। जाइए घाट पर मुँह हाथ धो आईए। इससे यह स्पष्ट होता है। हिरामन हिराबाई का कितना खयाल रखता है। यह वही आदमी करता है जो दिल का सच्चा हो यही उसके चरित्र की विशेषता है। हिराबाई स्वयं अपने हाथों से पत्तल बिछाकर खाना परोसती है और हिरामन को खाना खाने के लिए बुलाती है। यह

Be AatmaNirbhar. Use Kaagaz

तभी हो सकता है जब किसी पर भरोसा होता है। इस प्रकार हिरामन के चरित्र मे बहुत सारी अच्छाईयाँ प्राप्त होती है और हिरामन और हिराबाई मे एक अनोखा रिश्ता बनता है। यह एक मानवीय संबधो की मिसाल है।

हिरामन चाय नही पीता वह क्यारा जो है। इसपर हीराबाई पूछती है और तुमसे किसने कह दिया कि क्यारे आदमी को चाय नही पीनी चाहिए, इसपर हिरामन लजा जाता है। क्या बोले वह लाज की बात लेकिन वह भोग चुका है एक बार सरकस कम्पनी भी मेम के हाथ की चाय पीकर उसने देख लिया है "बडी गरम तासीर" इससे हिरामन के अबोध व्यक्तित्व का बोध होता है। हिरामन का स्वभाव भोला है मतलब वह समझदार नही ऐसा नही है। हिराबाई हिरामन को तुम मेरे वस्ताद हो ऐसा भी कहती है जैसे "एक अच्छर सिखाने वाला गुरु और एक राग सिखाने वाला उस्ताद" इसलिए वह समझदार है और ज्ञानी भी है। कम्पनी के कुछ लोग हिरामन हिराबाई का आदमी है यह भी कहते है यह हिरामन के अच्छे स्वभाव का परिचायक है।

वस्तु : पात्र कथाकार की मानस संतान होते हैं जिनके माध्यम से वह अपनी आवाज और प्रतिपाद्य सहृदय तक प्रेषित करता है। महान पात्रों की सृष्टि करके ही कलाकार अपनी महत्ता को स्थापित करता है। प्रेमचंद का होरी, प्रसाद की देवसेना, और रेणु का 'हिरामन' ऐसे अमर पात्र है जो सदियों तक अपने निर्माताओं की स्मृति को बनाए रखेगे। रेणु की कहानियो में पात्र चयन का मूल स्त्रोत भारतीय जीवन के मध्यवर्ग तथा निम्नमध्य वर्ग से है। उनकी कहानियों में अधिकांश पात्र निम्नवर्ग से ही लिए गए है। रेणु ने अपनी रचनाओ मे कृषको और श्रमिकों को अपने कहानियो में स्थान दिया है। 'ठेस' का 'सिरचन' तीसरी कसम का हिरामन रसप्रिया का मिरदंगिया, एक आदिम रात्रि की महक का 'करमा' और संवदिया कहानी का हरगोबिन आदिपात्र निम्न मजदूर और कृषक वर्ग के प्रतिनिधि है।

कहानी के अंत मे खेला शुरु होने पर जगा देना नही-नही खेला शुरु होने पर नही हिरिया जब स्टेज पर उतरे हमको जगा देना हिरामन के कलेजे में जरा आँच लगी धन-धन धडाम परदा उठ गया और हिराबाई शुरु मे ही उतर गयी स्टेज पर कपडा घर खचाखच भर गया है। हिरामन का मुँह अचरज से खुला गया लालमोहर को न जाने क्यो ऐसी हूँसी आ रही है। हीराबाई के गीत के हर पद पर वह हूँसता। बेवजह खेला शुरु हो गया है। हीराबाई के बारे में कपडाघर में बैठे लोग भला-बुरा कहते है तो हिरामन को बहुत गुस्सा आता है, वह कहता

Be AatmaNirbhar. Use Kaagaz

है "आओ एक-एक की गरदन उतार लेंगे हिरामन की आवाज कपडाकर को पड रही थी। हिरामन और उसके सभी मित्र भी यही कहते है कि, कम्पनी की औरत को कोई बुरी बात कहे तो कैसे छोड देगे। हिरामन को लगता है हीराबाई शुरु से ही उसकी और टकटकी लगाकर देख रही है गा रही है नाच रही है। लालमोहर को लगता है हिराबाई उसी को भी देखती है वह समझ गयी हिरामन से भी ज्यादा पावरवाला आदमी लालमोहर है। पलटदास किस्सा समझता है, हीराबाई को हिरामन से कोई छिन रहा है। हिरामन को एक गीत की आधी कडी हाथ लग गयी है" मारे गये गुलफाम कौन था यह गुलफाम हिराबाई रोती हुई गा रही थी "आजी हॉ मारे गए गुलफाम" इस तरह हिरामन कहानी के अंत तक हिराबाई पर कोई भी आंच नही आने नही देता यह सबसे बडी विशेषत हिरामन के चरित्रकी है। इसी कारण वह कहानी का कथानायक है।

तीसरी कसम कहानी का अध्ययन करने पर यह स्पष्ट होता है। रेणु के चरित्र की यह विशेषता है कि, वह प्रेमचंद की तरह कभी-कभी वर्णन द्वारा चरित्र चित्रण करते हैं। लेकिन संकेतों द्वारा भी अपने पात्रों का चरित्र उदघाटन करते हैं घटनाओं दृश्यों की संयोजना द्वारा भी पात्रों के चरित्र पर प्रकाश डालते है। लेकिन चरित्र चित्रण के लिए वार्तालाप शैली का प्रयोग रेणु ने कम ही किया है। आत्मकथात्मक शैलीद्वारा पात्रों ने अनेक कहानियों में अपने चरित्र का प्रकाशन स्वयं किया है। रेणु ने अपने पात्रों की आन्तरिक प्रवृतियों और मानसिक द्वन्दों का पूर्ण पता रहता है पात्रों के चरित्र में किसी प्रकार के परिवर्तन को न दिखाकर बल्कि उस परिवर्तन के क्रमिक रुप को दिखाते है। रेणु के चरित्र 'टाइप' चरित्र नहीं है। उनका हर एक पात्र अपनी निजता में जीता है। हिरामन गाडीवान है पर धुन्नीराम, पलटदास, लालमोहर आदि गाडीवानों से उसके चरित्र का साम्य नहीं है यह बात हिरामन के चरित्र को बहुत उँचाई तक ले जाती है। इतना उपर की हम 'हिरामन' को कहानी का कथानायक कहने पर बाध्य हो जाते हैं।

संदर्भ सूची

1. कथाकार फणीश्वरनाथ रेणु - डॉ. चंद्रभानु सोनवणे
2. फणीश्वरनाथ रेणु : व्यक्तित्व एवं कृतित्व - डॉ. हरिशंकर दुबे
3. कथा सरिता : सम्पादक - डॉ. जोगेन्द्रसिंह बिसेन

Be AatmaNirbhar. Use Kaagaz